

बौद्धदर्शनम्  
शास्त्री : तृतीय-सत्रार्द्धः

DSE – 2

| क्र. | पाठ्यक्रमविवरणम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | क्रेडिट | होरा  |
|------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|-------|
| 1    | 1. आचार्य-नागार्जुनपादस्य व्यक्तित्वं कृतित्वञ्च, रत्नावल्याः<br>पृष्ठभूमिः, महत्त्वञ्च, मङ्गलाचरणं प्रतिज्ञावचनञ्च<br>2. अभ्युदयनैःश्रेयसधर्मयोः क्रम-भेद-साधनादीनि च,<br>3. श्रद्धाप्रज्ञयोः भेदः,<br>4. श्रेयसो भाजनम्,<br>5. पण्डितस्य लक्षणम्,<br>6. दशशुक्लपथाःदशकृष्णपथाश्च,<br>7. अभ्युदयधर्मः,<br>8. शरीरतापनस्य अधर्मत्वम्                                           | 1       | 16-20 |
| 2    | 1. हिंसा-विहिंसा-चौर्य-परदारिकानां कायिककर्मणां दोषाः,<br>2. मृषावाद-पैशुन्य-पारुष्य-सम्भिन्नप्रलापानां वाचिककर्मणां दोषाः,<br>3. अभिध्या-व्यापादमिथ्यादृष्टीनां-मानसिककर्मणां दोषाः।<br>4. अशुभशुभकर्मयोः लक्षणम्,<br>5. अशुभकर्मणः शुभकर्मणश्च फलम्,<br>6. नैःश्रेयसधर्मस्य सूक्ष्मता गम्भीरता च,<br>7. अहङ्कार-ममकारयोः कारणानि, दोषाःनिवारणानि च।<br>8. निर्वाणस्य लक्षणम् | 1       | 16-20 |

बौद्धदर्शन-पालि-विद्याशाखाप्रमुखः - प्रो. राम नन्दन सिंह

दिनांक : \_\_\_\_\_

हस्ताक्षरम्

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

|   |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           |   |       |
|---|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---|-------|
| 3 | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. नास्तितादृष्टिः तद्दोषाश्च</li> <li>2. अस्तितादृष्टिः तद्गुणाश्च</li> <li>3. सद्भिः कः मोक्षः उच्यते</li> <li>4. हेतुफलयोः अस्तिनास्तीति अन्तद्वयाभावसन्दर्शनम् (1.46)</li> <li>5. हेतुफलयोः स्वभावसिद्धिनिराकरणम् (1.47)</li> <li>6. अस्मिन् सति इदं कथं भवति?</li> <li>7. सति मोहे न मुच्यते</li> <li>8. मोक्षप्राप्तये अद्वयज्ञानस्याशयकता (1.57)</li> </ol> | 1 | 16-20 |
| 4 | <ol style="list-style-type: none"> <li>1. संस्कृतलक्षणानां स्वभावसिद्धिनिराकरणम्</li> <li>2. परमाणोः नित्यतायाः खण्डनम् (1.66-67)</li> <li>3. नित्यपुरुषवादस्य खण्डनम् (1.68)</li> <li>4. एकानेकरहितयुक्त्या भावानां स्वभावसिद्धिनिराकरणम्</li> <li>5. भगवतो बुद्धस्य सर्वज्ञत्वसाधनम् (1.74)</li> <li>6. अनालयात् धर्मात् कथं भीताः भवन्ति अमेधसः (1.76)</li> </ol>                                      | 1 | 16-20 |

निर्धारितः पाठ्यग्रन्थः

आचार्यनागार्जुनविरचिता रत्नावली (प्रथमपरिच्छेदः, प्रथमाकारिकातः 77 कारिकापर्यन्तम्)  
सम्पादकः व्याख्याकारश्च, डॉ. अवधेश कुमार चौबे, प्रकाशक- भारतीय विद्या संस्थान, सी.  
27/59, जगतगंज, वाराणसी।

बौद्धदर्शन-पालि-विद्याशाखाप्रमुखः - प्रो. राम नन्दन सिंह

दिनांक : \_\_\_\_\_

हस्ताक्षरम्

